विषयानुक्रम

★विषयावतार पृष्ठ ५१-६३

शांति का स्रोत ५१ भारतीय संस्कृति की दो धारायें ५३, गौरव गाथा ५७, अन्य धर्मों में जैनधर्म का स्थान ५७, जैनधर्म विश्वधर्म है ५८।

★जैनधर्म और पुरातत्व ६४—१२१

जैनधर्म की मौलिकता और प्राचीनता ६४-७६ (जैनधर्म बौद्ध धर्म से प्राचीन है। जैनधर्म वेद धर्म से प्राचीन है) इतिहास काल के पूर्व का जैनधर्म ७७—८६ (भ० ऋषभदेव, कर्मयुग का प्रारंभ, नेमीनाथजी की ऐतिहासिकता, भगवान पार्श्वनाथ) भ० महावीर और उनकी धर्मक्रांति ८६—समकालीन धर्म प्रवर्तक १०१, महावीर और बुद्ध १०६, जैनधर्म और बौद्धधर्म १११, जैनधर्म और वैदिकधर्म ११४।

★जैन संस्कृति और सिद्धान्त १२२—१५८

जैन संस्कृति निरूपण १२३, धार्मिक सिद्धान्त १३१ (अहिंसा का महान् सिद्धान्त १४४ अपरिग्रह का जैन आदर्श १५८)

★जैन तत्वज्ञान १७२-२८४

जैन दृष्टि से विश्व, १७३ सृष्टि कर्तृत्ववाद १७४, पाश्चात्य सृष्ठावाद १७५ विशिष्टाद्वैतवाद की मान्यता १७६ अद्वैतवाद १८० बौद्ध दर्शन की मान्यता १८२, जैनदृष्टि से ईश्वर १८५, जैनदर्शन में आत्मा का स्वरूप १६४, कर्म का अविचल सिद्धान्त २०६ (पुनर्जन्म२१३ कर्मों की मूल प्राकृतियाँ २१६ कर्मवाद की व्यवहारिकता २२३) आध्यात्मिक विकास क्रम, गुणस्थान २२४, जैनधर्म का वैज्ञानिक द्रव्य निरूपण २३२, जैनधर्म भौतिक जगत् और विज्ञान २४३, (द्रव्य लक्षण २४४, अमूर्त द्रव्य २४६,) जैन विचार पद्धात्ति की मौलिकता—स्याद्वाद २६०, नयवाद २६४ जैनधर्म के विषय में भ्रांत मान्यतायें और उनका परिष्कार २७७ इतिहास विषयक भ्रांतियाँ २७८, आस्तिक नास्तिक विचार २८०।

★जैनधर्म और समाज २८५-३०६

जैन संघ व्यवस्था २८७ जैनधर्म और वर्ण व्यवस्था २६ जैनसंघ में नारी का स्थान २६७ प्रमुख जैन जातियाँ ३०३।

भारतीय इतिहास और राजनीति में जैन जाति–३०७-३९०

जैनों का राजनैतिक महत्व ३०७, गण सत्ताक प्रजा तंत्र ३०६, ८ ।जा चेटक ११ मगध के जैन सम्राट बिम्बि सार १४ अजात शत्रु कोणिक १५, नंद वंश और जैन धर्म १६, चन्द्रगुप्त मौर्य १७, सम्राट अशोक का जैनत्व २०, सम्राट सम्प्रति २५, खरवेल २६, मालव प्रान्त के जैन नृपति ३०, गुजरात के जैनराजा और जैनधर्म ३२, (वनराज चावड़ा ३३ सोलंकी वंश के राजा, विमल मंत्री, ३४ सिद्धराज जयसिंह ३५, परमार्हत नरेश कुमार पाल ३७, महा मंत्री वस्तुपाल तेज पाल ५०, दक्षिण के जैन राजा और जैन धर्म ३४५ (गंग वंश ४६, चामुण्ड राय ४७. राष्ट्रकूट वंश ४६, तोमानल वंश, कदम्ब वंश ४६, पाण्डय वंश पल्लव वंश ५०–५१) राजस्थान संरक्षक जैन वीर ३५२ जेम्स टॉड की अभिप्राय ५४, मेवा राज्य के जैन वीर ३५६ जोधपुर राज्य के जैन वीर ३६८ बीकानेर के जैन वी ३७५, मुगल सम्राट और जैन मुनि ३७८, भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के जैन वीर ३८

★जैन साहित्य और साहित्यकार पृष्ठ ३९१

(१) आगम काल ६५, अंग बाह्य आगमों के रचयिता ६७, आगमों पर विदेशी विद्वान ४०३.

(२) प्राकृत साहित्य का मध्य और संस्कृत साहित्य का उदयकाल
पाद लिप्त सूरि १०५, उमास्वाति ०६, सिद्ध सेन दिवाकर ०८, देवर्धि क्षमा क्षमण १०, जिनेन्द्र क्षमा क्षमण, मानतुंगाचार्य ११, आचार्य हरिभद्र १२, आदि २

(३) संस्कृत साहित्य का उत्कर्ष तथा अपभ्रंश का उदय ४१८
अभयदेव सूरि १८, कविधनपाल १६, बृहद् गच्छीय हेमचन्द्र २१, वादी देवसूरि २२ कवि श्रीपाल २३, कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र २४, रामचन्द्र सूरि २८ लक्ष्मी तिलक ३३, मेरुतुंग ३४ मंडन मंत्री ३४ कवि बनारसीदासजी ३६,

(४) आधुनिक काल (यशोविजय युग) ४३७.
आनंदघनजी ३७, यशोविजयजी ३७ विनय विजय तथा मेघ विजय उपाध्याय ३६ जैन साहित्य की सर्वाङ्गीणता ४४० विदेशी जैन साहित्यकार ४५०, भारतीय साहित्य रक्षा में जैन भंडारों का महत्व ४५३. ।❀

★ जैन कला और कलाधाम ४५५-५२४

जैन कला की लाक्षणिकता ६५६, श्री नानालाल मेहता का जैन शिल्प कला पर अभिप्राय ५७, रविशंकर रावल का अभिप्राय ५८, काठियावाड़ प्रदेश के प्रसि जैन तीर्थ स्थान ४६१

❀इस विषय सूची में केवल प्रमुख साहित्य कारों के ही नामोल्लेख व संख्या बताई गई है। विषय विस्तार में कई साहित्यकारों का निवेचन है।

गिरी राज शत्रुञ्जय ६१—महुवा, वल्लभीपुर वर्धमानपुर द्वारिका ४६०, गिरनार ४७१ अंजारा पार्श्वनाथ ४७३, प्रभास पाटन, वरेचा पार्श्वनाथ, जाम नगर ४७५, कच्छ के तीर्थ—भद्रेश्वर ४७५, सुयरी ४७६, गुजरात के जैन-तीर्थ ४७७ शंखेश्वर पार्श्वनाथ ७७ पाटन ७८, अहमदाबाद ७६ ईडगिरी ८० पोसीना, पालनपुर, भंडौच ८१, सूरत, खंभात् अगाशी ८३, बम्बई पावांगढ़ चांपानेर ८४ भीनमाल ८५।

मारवाड़ के तीर्थ—चन्द्रावती ४८५ आबू के जग प्रसिद्ध मन्दिर ४८६, कुंभारिया ८६ जीरावाला पार्श्वनाथ सांचोर ४८०, मारवाड़ की पंच तीर्थी ४६१ राता महावीर, जालौर ६३, कोरंटा ओसियाँ, सिरोही ६४, जैसलमेर ४६५ मेवाड़ के जैन तीर्थ केशरियाजी ४६८, देलवाड़ा, करेडा, दयालशाह का मन्दिर ६६ नागदा, उदयपुर, चितौड़गढ़ ५०० मालवा के तीर्थ—मांडवगढ़ ५०१ लक्ष्मणी तीर्थ, तालनपुर मक्षी पार्श्वनाथ अवंन्ति पार्श्वनाथ, सेमलिया, वही पार्श्वनाथ, भोपावर ५०२—३, अमीझरा कुडंलपुर ४० राजपूताना के अन्य कतिपय दर्शनीय स्थान ५०४ अजमेर, जयपुर अलवर महावीरजी ५०५ मध्य प्रदेश और दक्षिण भारत के तीर्थ-सिरपुर अंतरिक्ष पार्श्वनाथ ५०५ मुक्तागिरि ५०६ भांडुकजी कुंभोज तीर्थ ५०६, कारजां सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी क्षेत्र बाहुवंद, कुल पाक ५०७, गज पंथा मांगीतुंगी, निरुमलई, कारकल०८ मूड बिद्री, श्रमण बेल गोला ५०६, उत्तर पूर्व के जैन तीर्थ ५११, बानारस, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी अयोध्या केदार ५११ श्रावस्ती रत्नपुरी शोरीपुर मथुरा हस्तिनापुर प्रयाग कोशाम्बी ५१२ भद्दिलपुर मिथिला, पटना ५१३ पावांपुरी ५१३ राजगृह ५१४ काकंदी क्षत्रिय कुंड, ऋजु-बालका १५ चम्पापुरी मधुवन १६ सम्मेत शिखर ५१६।

★ प्राचीन जैन स्मारक ५१७,

स्तूप ५१८, गुफायें २१, सिरपुर की महत्व पूर्ण धातु प्रतिमा २३ वीर सं० ८४ का शिलालेख ५२४

★औद्योगिक और व्यवसायिक जगत् में जैनों का स्थान ५२५-५३२

★ जैनधर्म के अन्तर्गत भेद प्रभेद ५३३

दिगम्बर सं० ५३७, श्वेतांबर सं०, ५३६ स्थानकवासी सं० ५४१, तेरापंथ ५४३

★जैन समाज गौरव (वर्तमान जैन समाज परिचय) ५५५ से प्रारम्भ।

ग्रन्थ के माननीय सहायक ५५७–५९४

रा० सा० सेठ हुक्मचंदजी इन्दौर ५७, सेठ कन्हैयालालजी भंडारी इन्दौर ६०, सेठ भागचन्दजी सोनी अजमेर ६२, सेठ छगनमलजी मूथा बंगलौर ६६, सेठ ओमाजी ओखाजी जोधपुर ६७, रामपुरिया परिवार बीकानेर ६६, रानीवाला

परिवार ब्यावर ७२, सेठ केशरीसिंहजी बाफणा कोटा ७४, सेठ सौभाग्यमलजी लोढा अजमेर ७५, सिंघी परिवार कलकत्ता ७६, सेठ नेमीचन्दजी गधइया कलकत्ता ५७६, सेठ राजमलजी ललवाणी जामनेर ५८१, साहू शीतलप्रसादजी दिल्ली ८२, सेठ रतनचन्दजी बांठिया पनवेल ८३, चौपड़ा परिवार गंगाशहर ८४, सेठ चंपालालजी बांठिया भीनासर ८५, सेठ चपालालजी बैद भीनासर ८६ सेठ नथमलजी सेठी कलकत्ता ८७, सेठ घनश्यामदासजी बाककीवाल लालगढ़ ८८, श्री जवाहरलालजी दफ्तरी ६१, सेठ लक्ष्मीचन्दजी फतेहचंदजी कोचर बीकानेर ५६२, श्री धर्मचन्दजी सरावगी कलकत्ता ६४, सेठ नरभेरामजी हंसराजजी कामानी ५६५

गुजराती सज्जन ५६५
राजस्थान का जैन समाज ५६८
अजमेर मेरवाड़ा ६६२
मध्यभारत ६७२
खानदेश यवतमाल व बरार प्रदेश ६८८
मध्य प्रदेश ७०७
दिल्ली व पंजाब प्रान्त ७१६
बम्बई प्रान्त ७३१
निजाम मद्रास, मैसूर व दक्षिणी भारत ७५१
बंगाल, बिहार व आसाम ८५१
परिशिष्ट

आवश्यक सूचना—

नोट—ग्रन्थ प्रारम्भ पृष्ठ ५१ से किया गया है इससे पूर्व की पृष्ठ "भूमिका" के लिये छोड़े गए थे।

भूमिका एक विशिष्ट विद्वान् ने लिखने का आश्वासन प्रदान किया था किन्तु बार २ निवेदन करने पर जब वह प्राप्त न हो सकी और ग्रन्थ प्रकाशन में बिलम्ब होता दिखाई दिया तो बिना भूमिका के ही यह प्रकाशित कर रहे हैं। अतः यह पृष्ठ संख्या खाली समझी जाय।